ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

# जयपुर राज्य में महिला शिक्षा में स्व. रतनी देवी शास्त्री का योगदान

KEY WORDS:

**ममता चौपड़ा** शोधार्थी भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

स्व. रतनी देवी शास्त्री, स्वतंत्रता सेनानी हीरालाल शास्त्री की धर्मपत्नी थी। हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री (30 मार्च 1948 से 5 जनवरी 1951 तक) रहे। महिलोत्थान के क्षेत्र में रतन शास्त्री का योगदान उल्लेखनीय रहा है।

सामाजिक पुनरूत्थान एवं स्वतंत्रता संग्राम में जुड़ने के लिए आमजन को प्रेरित करने हेतु हीरालाल शास्त्री व रतन शास्त्री वनस्थली आये। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु इनके द्वारा वनस्थली ग्राम में 6 अक्टूबर 1935 को 'जीवन शिक्षा कुटीर' नामक शिक्षण संस्थान की स्थापना की गई। इस शिक्षण संस्था की समस्त शक्ति का स्त्रोत हीरालाल शास्त्री की पुत्री शांता बाई को माना जाता है।[1] शांता बाई ने औपचारिक शिक्षा के बिना ही 8–10 वर्ष की आयु में स्वाध्याय से वेद पढ़ना शुरू कर दिया था। 12 वर्ष की आयु में अचानक उनकी मृत्यु हो गई। शास्त्री जी को इस घटना से काफी पीड़ा हुई। उन्होंने दिवंगत शांताबाई से प्रेरणा लेते हुए बालिकाओं को शिक्षा देने का संकल्प लिया। इस संकल्प की पूर्ति हेतु शास्त्री जी की अपने मित्रों व परिवारजनों की बच्चियों की शिक्षा हेतु एक विद्यालय खोलने की इच्छा जागृत हुई। पाँच बच्चियों के आगमन पर विद्यालय खोला गया। सबके समक्ष पाठ्यक्रम की समस्या उत्पन्न हुई। अतः निर्णय लिया गया कि विद्यालय का पाठ्यक्रम शांताबाई के व्यक्तित्व के आधार पर पंचमुखी रखा गया। जैसे (1) बौद्धिक, (2) व्यवहारपरक, (3) सौन्दर्यपरक, (4) खेलकूद/मार्शल आर्ट (शारीरिक) व (5) नैतिक शिक्षा। वनस्थली विद्यापीठ के पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य माना गया है। महाविद्यालय मे दी जाने वाली पंचमुखी शिक्षा के कारण यहाँ अध्ययनरत बालिकाओं ने कई कीर्तिमान स्थापित किए है, जैसे – फ्लाइंग ऑफिसर अवनी चतुर्वेदी, जो मिग 21 लड़ाकू विमान उड़ाने वाली प्रथम भारतीय महिला है। भारत की प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार जिनके अध्यक्ष पद पर रहते हुए खाद्य सुरक्षा व लोकपाल जैसे महत्वपूर्ण बिल लोकसभा में पास हुए। सुमित्रा सिंह, जो राजस्थान की 12वीं विधानसभा की पहली महिला अध्यक्ष बनी। कमला बेनीवाल, जो राजस्थान की पहली महिला मंत्री बनी। इसके अतिरिक्त सुनीता गोदारा, जिन्होंने 1984 में दिल्ली मैराथन जीता व पहली बार राष्ट्रीय मैराथन चैंपियन बनी। इन्होंने लगभग 77 मैराथन जीते है, जो अपने आप में एक बहुत बड़ा कीर्तिमान है।

शिक्षा कुटीर अथवा वनस्थली विद्यापीठ को अपनी स्थापना के समय काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। वित्तीय साधनों का अभाव, बालिकाओं की शिक्षा के संबंध में प्रचलित आलोचनाएँ तो थी, साथ ही ब्रिटिश सरकार के विरोध का सामना भी रतन देवी को करना पड़ा। इस मसले पर स्वयं रतनी देवी शास्त्री ब्रिटिश अधिकारियों से मिली एवं उन्हें कहा कि, 'आप यदि यह विद्यालय बन्द करवाना चाहे तो फौज लेकर आ सकते है, मैं आपको आपकी कार्यवाही के लिए तैयार मिलूंगी'। रतन देवी के विद्यालय के प्रति अड़िग रवैये को देखने के पश्चात् ब्रिटिश अधिकारियों की तरफ से विद्यालय बन्द न करने का आश्वासन प्राप्त हुआ। बाद में ब्रिटिश अधिकारी भी वनस्थली विद्यापीठ को देखने गए।[2] इनके सबके अतिरिक्त वनस्थली ग्राम को लेकर भी लोगों में काफी शंकाएँ विद्यमान थी जैसे – तत्कालीन समय में आवागमन के न तो साधन थे, न ही सड़क बनी हुई थी। संचार के साधनों की उपलब्धता भी उस दौर में नहीं थी, इस प्रकार उस पिछड़े गाँव में छात्राओं की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ व्याप्त थी। इस कारण लोगों ने वनस्थली विद्यापीठ को अन्यत्र खोलने का सुझाव दिया किन्तु रतनी देवी शास्त्री का दृढनिश्चय था कि "मेरी पुत्री शांताबाई का शरीर इसी जगह पंचतत्व में विलीन हुआ है, अतः यह शिक्षण संस्थान यही चलना चाहिए।[3]

गांधी जी एवं विनोबा भावे जैसे व्यक्तियों ने भी वनस्थली की सराहना की किन्तु बालिकाओं की संख्या निश्चित रखने का सुझाव दिया, परन्तु रतन देवी शास्त्री द्वारा निश्चित किया गया कि वे बालिकाओं की संख्या पर पाबंदी नहीं रखेगी, जो बालिकाएँ शिक्षा हेतु आएंगी उन्हें प्रवेश निश्चय ही दिया जाएगा, उनके लिए संस्थान के द्वार बंद नहीं किए जाऐंगे।

इस प्रकार उपर्युक्त परिस्थितियों में सन् 1935 में वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना हुई। गांधी जी के बुनियादी शिक्षा सिद्धांत एवं भारतीय संस्कृति को आत्मसात् करके खादी वस्त्रों की अनिवार्यता में यहाँ बालिकाओं को शिक्षा दी जाती थी। स्वयं रतन देवी शास्त्री ने भी सदैव खादी की साड़ियाँ पहनकर बालिकाओं को खादी से जुड़े रहने को प्रेरित किया।

इस प्रकार बालिकाओं की शिक्षा हेतु पूर्ण रूप से समर्पित शिक्षा संस्थान की शुरूआत कर रतन देवी शास्त्री ने महिला उत्थान हेतु एक प्रशंसनीय कार्य किया। उन्नीसवीं शताब्दी में जब समाज में पर्दा प्रथा विद्यमान थी, जिसके चलते किसी महिला का घर की चारदीवारी से निकलना भी मुश्किल था, उस समय वनस्थली जैसा शिक्षण संस्थान खोलकर महिलाओं को शिक्षा एवं समाज सेवा हेतु प्रेरित करना एक क्रांतिकारी कदम था। बालिका शिक्षा के अतिरिक्त ग्रामीण विकास एवं खादी, साक्षरता एवं आत्मनिर्भरता इत्यादि हेतु भी रतन देवी शास्त्री ने सराहनीय कार्य किए। इसके अतिरिक्त 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भूमिगत कार्यकत्ताओं एवं उनके परिजनों की सराहनीय सेवा की। महिला एवं बाल कल्याण के क्षेत्र में किए गए प्रशंसनीय योगदान हेतु रतन देवी शास्त्री को 'जमनालाल बजाज पुरस्कार'[4] एवं 1955 में पद्मश्री, 1975 में पद्म भूषण[5] से सम्मानित किया गया।

वनस्थली विद्यापीठ का लक्ष्य छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना था। इस संस्थान के संचालकों का उद्देश्य था कि यहाँ अध्ययनरत छात्राएँ समाज, परिवार अथवा जिस भी क्षेत्र में जाएँ वहाँ अपना नेतृत्व प्रदान करें। अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वनस्थली की शिक्षा योजना राष्ट्रीय एवं असांप्रदायिक थी।[6] इस शिक्षा योजना के पांच अंग है – प्रथम, शारीरिक शिक्षा – वनस्थली में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के आधुनिक व पुराने खेल जैसे– कबड्डी, खो–खो, हॉकी, बैडमिण्टन, लॉंग जम्प, साईकिल चलाना, तैराकी, घुड़सवारी इत्यादि है। विभिन्न प्रकार के यौगिक आसनों को सिखाने का भी प्रबन्ध है। छात्राओं को बन्दूक चलाना भी सिखाया जाता है। शारीरिक उच्च शिक्षा हेतु डिग्री भी प्रदान की जाती है। द्वितीय, व्यावहारिक शिक्षा – अथवा गृह कार्य – इसके अन्तर्गत घर – गृहस्थी, भोजन, बनाने अथवा दूसरे संबंधित कार्यो जैसे – पापड़, मंगोड़ी, बिस्कुट बनाने आदि सम्मिलित है। कातना, रंगाई–छपाई, खिलौना बनाना, जिल्दसाजी, पेपरमेशी इत्यादि कार्य सिखाये जाते है। तृतीय, सौन्दर्यपरक अथवा कला शिक्षा – विभिन्न स्तर पर गायन, चित्रकला, नृत्य आदि की शिक्षा की व्यवस्था वनस्थली के पाठ्यक्रम में की गई है। विभिन्न कलाओं के लिए प्रशिक्षण एवं डिग्रीयाँ प्रदान की जाती है। चतुर्थ, नैतिक शिक्षा – छात्राओं के नैतिक व्यक्तित्व का विकास करना तथा उनमें सर्वधर्म सम्भाव की भावना पैदा करना नैतिक शिक्षा का लक्ष्य है। इस शिक्षा का आधार वेद, गीता एवं रामायण है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रतिदिन सर्वधर्म प्रार्थना आयोजित की जाती है। पंचम, बौद्धिक अथवा पुस्तकीय शिक्षा जिसमें प्रचलित शिक्षा प्रणाली को स्थान दिया गया है जिसमें सामाजिक विज्ञान, विश्व इतिहास को स्थान दिया गया है।

वनस्थली में बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था थी। इसमें आस–पास के स्थानीय निवासियों को रोजगार भी प्रदान किया गया था। सन् 1941–1942 में वनस्थली में कुल 1949 छात्राएँ अध्ययनरत थी।[7] वनस्थली विद्यापीठ में उन्नीसवीं शताब्दी में जयपुर एवं राजपूताने की ही नहीं बल्कि दिल्ली, गुजरात, मध्य भारत, पंजाब की छात्राएँ भी अध्ययनरत थी। गरीब व वंचित वर्ग की बालिकाओं के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था थी। छात्राओं को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया जाता था, इस कारण वे अपने खाने, वस्त्र इत्यादि का खर्चा स्वयं उठाती थी। वनस्थली के पास उस समय निश्चित आय व स्थायी कोष का अभाव था, अतः विद्यालय प्रतिवर्ष स्त्री शिक्षा हेतु समर्पित महानुभावों द्वारा प्रदान किए गए चंदे पर ही निर्भर था।[8]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जहाँ महिला वर्ग में अशिक्षा, बाल–विवाह, कन्यावध जैसी प्रथाएँ विद्यमान थी, उस समय में रतन देवी शास्त्री ने महिला शिक्षा हेतु वनस्थली विद्यापीठ जैसा संस्थान निर्मित कर राजपूताने में महिला शिक्षा की जो अलख जगाई वह वर्तमान समय में भी स्त्री शिक्षा हेतु समर्पित है। गाँधीवादी मूल्यों में सादगी एवं नैतिकता के मूल्यों का विकास किया है। वनस्थली के संस्थापकों का इस शिक्षण संस्थान की स्थापना के पीछे परम उद्देश्य था कि "यहाँ अध्ययनरत छात्राएँ समाज, परिवार व जिस भी क्षेत्र में जाएँ, अपना नेतृत्व प्रदान करें।" इस उद्देश्य को यहाँ अध्ययन करने वाली छात्राओं ने समय–समय पर सिद्ध भी किया है। निश्चय ही वनस्थली विद्यापीठ ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला शिक्षा हेतु उत्कृष्ट आदर्श स्थापित किया है।

## संदर्भ

1 प्रो. आदित्य शास्त्री (हीरालाल शास्त्री के पोते एवं वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति) द्वारा वरिष्ठ पत्रकार रविन्द्र गौतम को 22 मार्च 2019 को को दिये गये साक्षात्कार का प्रकाशित अंश
2 त्रिवेदी, भगवान सहाय, राजस्थान में 'स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा पंडित हीरालाल शास्त्री, पृ. 31
3 वहीं, पृ. 31
4 जमनालाल बजाज अवार्ड्स आर्काइव, जमनालाल बजाज फाउण्डेशन
5 पद्म पुरस्कार निर्देशिका, सुजस संदर्भिका, राजस्थान, सूचना एवं जन संपर्क विभाग, जयपुर पृ. 837–838
6 हितैषी, धार्मिक सचित्र मासिक पत्रिका, जयपुर अंक, दिसम्बर–जनवरी 1941–1942, पृ. 246
7 हितैषी, धार्मिक सचित्र मासिक पत्रिका, जयपुर अंक, दिस.–जनवरी, 1941–42
8 वही, पृ. 248